Page No.:
Date:
YOUVA

भारत में राष्ट्रवाद का उदय

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतीय राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास मुख्यतः ब्रिटिश शासन की 'क्रिया एवं प्रतिक्रिया' का परिणाम था। ब्रिटिश सरकार ने भारत के राजनीतिक, आर्थिक धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किये थे जिसके परिणामस्वरूप एक ओर जहां भारत में आधुनिक संगठनों एवं संस्थाओं यथा- प्रजातांत्रिक विचारों, एकीकृत प्रशासन, रेल, डाक, तार, शिक्षा, प्रेस इत्यादि का विकास हुआ वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता के शोषण का भी मार्ग प्रशस्त हुआ। भारतीय जीवन में आये इस बदलाव ने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में राष्ट्रवाद का उदय चूंकि ब्रिटिश शासन के आने के बाद प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से जिसे एआर देसाई 'क्रिया एवं प्रतिक्रिया' कहते हैं, ब्रिटिश शासन के ही परिणामस्वरूप हुआ। इसलिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने अपनी 'सभ्य बनाने वाली भूमिका' पर काफी बल दिया है। वे भारतीय राष्ट्रवाद को 'पालित संतान' बताते हैं। निःसंदेह एक हद तक उनका यह दावा सत्य है लेकिन इस दिशा में उनकी सकारात्मक भूमिका पर संदेह है। स्पष्टतः अंग्रेजों ने अपनी आवश्यकताओं एवं हितों की पूर्ति के लिए ही भारत में आधुनिक संस्थाओं एवं पाश्चात्य विचारों का प्रचार-प्रसार किया था परंतु भारत में राष्ट्रीय चेतना उपनिवेशवाद के विरुद्ध एक संघर्ष के रूप में फलित हुई।

बिपनचन्द्र, आर. पी. दत्त जैसे इतिहासकारों के अनुसार औपनिवेशिक शोषण से उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ भारत में राष्ट्रवाद के उदय का आधार थीं। अंग्रेजी राज का एकमात्र उद्देश्य भारत का औपनिवेशिक शोषण करना था, इसीलिए अंग्रेजों ने भारत के परम्परागत आत्मनिर्भर ग्रामीण ढाँचे को समाप्त कर नवीन कृषि व्यवस्था, भूमि व्यवस्था, उद्योग संभार एवं शिक्षा का विकास किया। इसका एकमात्र उद्देश्य भारतीय जनता का अधिकाधिक शोषण करना था परिणामस्वरूप इनकी शोषणमूलक नीतियों से सभी वर्गों में असंतोष एवं नाराजगी व्याप्त हो चला। नवीन भूराजस्व व्यवस्था, कृषि के

Scanned with CamScanner

वाणिज्यीकरण जैसी नीतियों से अधिसंख्य कृषक-वर्ग प्रभावित हुए। पीड़ित एवं शोषित किसानों ने परम्परागत नेतृत्व में अपने असंतोष को हिंसक-पूर्ण विद्रोहों द्वारा अभिव्यक्त किया। केथलिनगफ ने 77 हिंसक किसान विद्रोहों का उल्लेख किया है। यद्यपि ये विद्रोह असफल हो जाते थे लेकिन इनसे अंग्रेजी विरोधी भावनाएं झलकती थी। देशी उद्योगों के विनाश, धन के निष्कासन, मूल्यवृद्धि अकाल, महामारी आदि के कारण यहां की जनता, किसान मजदूर सभी बेहाल थे। देहातों में कर्जदारों की संख्या बढ़ी। लोगों की गरीबी एवं आर्थिक दुरावस्था का प्रभाव व्यापारी, बैंकर एवं विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों पर पड़ा। उनका यह असंतोष शिक्षित मध्यम वर्ग के माध्यम से उभर कर सामने आने लगा। नवोदित शिक्षित मध्य वर्ग औपनिवेशिक शोषण के स्वरूप को भलिभाँति समझता था तथा स्वतन्त्रता से विश्लेषित करने में सक्षम था। इन्होंने पुस्तकों लेखों, समाचारपत्रों, पत्रिकाओं के जरिये जनसाधारण को ब्रिटिश राज की शोषणमूलक नीतियों से अवगत कराया तथा विभिन्न संगठनों की स्थापना की। अंग्रेजों की विभेदकारी नीतियों से उभरते हुए भारतीय पूंजीपति वर्ग भी प्रभावित थे। सरकार की आयक चुंगी कर तथा यातायात संबंधी नीतियों के कारण ये असंतुष्ट थे। अपने शैशवकाल में इन्हें सरकार की सक्रिय सहायता की आवश्यकता थी लेकिन कोई सहायता नहीं मिली। उन्हें विदेशी पूंजीपतियों की असमान प्रतियोगिता में खड़ा रहना पड़ा। ऐसे में इन्होंने महसूस किया कि राष्ट्रीय सरकार ही भारतीय व्यापार एवं उद्योगों के विकास की परिस्थितियां तैयार कर सकती है। कुल मिलाकर अंग्रेजों की दुर्भावनापूर्ण शोषणमूलक नीतियों ने समाज के सभी वर्गों के लोगों को प्रभावित किया। आर्थिक नीतियों एवं उससे उपजे आर्थिक असंतोष ने लोगों को एकजुट होने में मदद की जिसे बिपनचन्द्र "आर्थिक राष्ट्रवाद" कहते हैं।

अंग्रेजों ने अपने प्रशासनिक सुविधा एवं व्यापारिक स्वार्थों की पूर्ति हेतु समूचे देश को राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से एकीकृत कर दिया। एक समान शासन प्रणाली, न्यायिक ढांचा, कानून, शिक्षा, रेल डाक, तार व्यवस्था लागू की गई। सामंती या खंडित भारत राजनीतिक एकता एवं केन्द्रीकृत प्रशासन में बंध गया। इससे भारतीयों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्पर्क का मौका मिला

Scanned with CamScanner

और उन्हें साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन छेड़ने में आसानी हुई।

भारत में राष्ट्रवाद के उदय को अंग्रेजी शिक्षा की देन भी कहा जा सकता है। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के जनक लार्ड मैकाले का भारत में काली चमड़ी में एक अंग्रेज पैदा करने जैसे स्वप्न केवल उसी रूप में पूरा नहीं हुआ। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयों ने पश्चात्य साम्राज्यवाद को भी पहचाना तथा लोकतांत्रिक विचारों से भी अवगत हुये। इन्हीं के नेतृत्व में आगे चलकर भारत का राष्ट्रीय आंदोलन चला।

अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीय एवं जन-साधारण के बीच की खाई को पाटने का महत्वपूर्ण कार्य 'प्रेस' एवं 'देशी साहित्य' ने किया। राष्ट्रवादी भारतीयों ने इनकी सहायता से जनसाधारण में आधुनिक विचारों का प्रचार प्रसार किया तथा अखिल भारतीय चेतना जागृत की। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में बड़ी संख्या में राष्ट्रवादी समाचार पत्र निकले जिसमें अमृतबाजार पत्रिका, मराठा, केसरी, इंडियन मिरर, बंगाली आदि प्रमुख था। इनमें सरकारी नीतियों की आलोचना होती थी तथा भारतीय दृष्टिकोण को सामने रखा जाता था। प्रेस ने देश के विभिन्न भागों में रहनेवाले राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं को परस्पर विचार-विनिमय में सहायता दी। बंकिमचंद्र, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा, अल्ताफ हुसैन आदि ने अपनी रचनाओं के जरिये राष्ट्रीय चेतना जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति में 19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों का विशेष महत्व है। राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद, केशवचन्द्र सेन, सैय्यद अहमद खाँ आदि ने समाज का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया एवं आधुनिक आधार पर परिवर्तन लाने का प्रयास किया। सुधारकों ने पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के अंधानुकरण करने के बजाये भारतीय धर्म और संस्कृति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया। इससे देशवासियों में आत्मसम्मान, गौरव एवं राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना का विकास हुआ।

भारतीय अतीत की खोज भी बौद्धिक जागरण के विकास में सहायक रही। अंग्रेजों ने अपने शासन व्यवस्था को न्यायोचित ठहराने के लिए भारतीय समाज को स्थिर एवं पिछड़ा बताने का प्रयास किया। इनका उद्देश्य भारतीयों को असभ्य दिखाकर स्वशासन के लिए अयोग्य करार देना था लेकिन कई

प्राच्यविदों एवं भाषाविदों यथा विलियम जोंस, मैक्समुलर, वी.ए. स्मिथ आदि ने भारतीय अतीत के सांस्कृतिक धरोहर एवं उपलब्धियों को प्रकाश में लाया। इससे भारतीयों में हीनता की भावना दूर हुई एवं उनमें आत्मसम्मान तथा राष्ट्र गौरव की भावना पनपी।

अंग्रेजों की नस्ली भेदभाव की नीति भारतीय राष्ट्रीय चेतना की जागृति में सहायक बनी। उनमें प्रजातीय श्रेष्ठता की भावना विद्यमान थी तथा वे भारतीयों को अपमान एवं घृणा की दृष्टि से देखते थे। यूरोपीयन क्लबों, रेल की प्रथम श्रेणी में यात्रा भारतीयों के लिए प्रतिबंधित था। मुकदमों की सुनवाई अंग्रेजों के लिए केवल यूरोपीय न्यायाधीश करते थे। अंग्रेजों के इस विभेदकारी नस्ली नीति ने भारतीयों में एकता, राष्ट्रीयता एवं उनके प्रति घृणा भावना फैलाई।

लिटन और रिपन के क्रमशः प्रतिक्रियावादी एवं उदारवादी कार्यों ने भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत किया। लिटन का वर्नाकुलर प्रेस ऐक्ट, आर्म्स ऐक्ट तथा सिविल सेवा की उम्र सीमा को घटाने जैसे कदमों से भारतीयों के मन में असंतोष का जन्म हुआ। 1877 में लिटन द्वारा अकाल की विभीषिका के बीच दिल्ली दरबार का आयोजन वस्तुतः असंतुष्ट भारतीयों के मुंह पर तमाचा मारने जैसा था। लिटन के उत्तराधिकारी रिपन ने इसके विपरीत भारतीयों को स्थानीय स्वशासन की शिक्षा देना प्रारम्भ किया तथा इल्बर्ट बिल के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की। S. Gopal रिपन को भारतीय राष्ट्रवाद का जनक मानते हैं। इस प्रकार लिटन के प्रतिक्रियावादी एवं रिपन की उदारवादी कार्यों के परिणामस्वरूप भारत में राष्ट्रवाद की भावना को बल मिला।

भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं के प्रचार-प्रसार में अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएँ भी सहायक रही। अमेरिकी क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति यूरोप में इटली, जर्मनी तथा अन्य जगहों के राष्ट्रवादी आंदोलनों से भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में गतिशीलता आयी।

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद बुनियादी तौर पर विदेशी आधिपत्य के चुनौती के जवाब के रूप में उदित हुआ। इसकी जड़ें भारतीय जनता के हितों एवं भारत में ब्रिटिश हितों के टकराव में निहित थीं। राष्ट्रवादी चेतना का विकास दो स्तरों पर हुआ - मानसिक एवं नैतिक। बौद्धिक एवं

Scanned with CamScanner

सांस्कृतिक जागरण, ऐतिहासिक शोध, शिक्षा के प्रचार-प्रसार, प्रेस एवं साहित्य ने भारतीय की औपनिवेशिक मानसिकता को अंत किया तथा आर्थिक कठिनाइयाँ, राजनीतिक असंतोष, रेल डाक-तार इत्यादि के प्रचार ने भौतिक स्तर पर संगठित आंदोलन के लिए जमीन तैयार कर दी जिससे भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

—— X ——

Scanned with CamScanner